

**Dr•Navin Chandra Sharma**  
**Assistant Professor**  
**Dept of psychology**  
**Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh College Ara**

**Date; 02/02/2026**

**Class: P.G Semester - 4th**

**Clinical Psychology,**

**Topic :- Definition of Clinical Psychology**

**परिचय (Introduction):**

नैदानिक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक प्रमुख प्रयुक्त शाखा (applied branch) है जिसका संबंध मानसिक रोग वर्णन, वर्गीकरण, निदान (diagnosis) तथा पूर्वानुमान (prognosis) से है। नैदानिक मनोवैज्ञानिक रोगियों की चिकित्सा मानसिक चिकित्सालय (mental hospital) या निजी उपचार गृह में करते हैं। रोग की गहणता को देखते हए दो तरह से उपचार किया जाता है। जो रोगी गंभीर मानसिक रोग से ग्रस्त होते हैं उन्हें मानसिक अस्पताल में भर्ती कर चिकित्सा की जाती है। यहाँ रोगी की समस्त आवश्यकताओं एवं सुविधाओं का ख्याल रखा जाता है। कुछ रोगी ऐसे होते हैं जिन्हें बराबर देखभाल की आवश्यकता नहीं होती। ऐसे रोगियों की समस्याओं को कम-से-कम समय में समझकर उसका उपचार करने की कोशिश की जाती है। इस तरह के मासिक अस्पताल को वाह्य रोगी उपचार गृह (outpatient clinic) भी कहा जाता है।

मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई नैदानिक मनोविज्ञान की कुछ परिभाषाओं से भी नैदानिक मनोविज्ञान के स्वरूप पर स्पष्ट प्रकाश पड़ता है। रेसेनिक (Resnick, 1991) के अनुसार APA के नैदानिक मनोविज्ञान के डिवीजन द्वारा नैदानिक मनोविज्ञान की अधिकारिक परिभाषा (official definition) इस प्रकार दी गई है, "नैदानिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में शोध, शिक्षण तथा क्लायर जीव संख्या के बड़े प्रसार में पाये जानेवाले वैदिक सांवेदिक, जैविक, मनोवैज्ञानिक सामाजिक एवं व्यवहारात्मक कुसमायोजन, असमता तथा कष्ट आदि को समझने, पूर्वानुमान लगाने तथा कम करने के नियमों, विधि एवं कार्यविधियों के उपयोग से संगत सेवाएँ सम्मिलित होती हैं। "The field of clinical psychology involves research, teaching and services relevant to the applications of principals, methods and procedure for understanding, predicting and alleviating intellectual, emotional, biological, psychological, social and behavioural maladjustment, disability and discomfort applied to a wide range of client populations" Resnick: The Clinical Psychology.

इसी प्रकार डेविसन तथा नील (Davison and Neale, 1996) ने नैदानिक मनोविज्ञान की एक संक्षिप्त परिभाषा दी है जो काफी संतोषप्रद है। उनके अनुसार, "नैदानिक मनोविज्ञान मनोविज्ञान का एक विशिष्ट क्षेत्र है जिसका संबंध मानसिक विकृति के अध्ययन, इसके कारण, रोकथाम तथा उपचार से है।"

"Clinical psychology is the special area of psychology concerned with the study of psychopathology, its causes, prevention and treatment." - Davison and Neals, 1996 P.5.5

इन परिभाषाओं के अतिरिक्त Watson (1951), Ratter (1971), Goldenbert (1973), Korchin (1986) Saccuzzo & Kaplan (1984) आदि ने भी नैदानिक मनोविज्ञान को परिभाषित किया है। इन परिभाषाओं के विश्लेषण से नैदानिक मनोविज्ञान का स्वरूप और भी स्पष्ट हो जाता है जिन्हें निम्न क्रम में देखा जा सकता है-

- (i) नैदानिक मनोविज्ञान एक व्यवहारिक मनोविज्ञान है (Clinical Psychology is an applied Psychology): व्यवहारिक मनोविज्ञान से तात्पर्य है कि जो शुद्ध मनोविज्ञान द्वारा बनाये गये सिद्धान्तों तथा नियमों के आलोक में व्यवहारिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है। नैदानिक मनोविज्ञान भी मानसिक रोगियों की व्यावहारिक समस्याओं का समाधान करता है। समाधान के क्रम में वह शुद्ध मनोविज्ञान के सिद्धान्तों एवं नियमों का उपयोग करता है।
- (ii) नैदानिक मनोविज्ञान रोगी की अपूर्वता को समझने का अभिप्राय रखता है (Clinical Psychology intowards to understand the unique non of the client) नैदानिक मनोविज्ञान का उद्देश्य रोगी के अपूर्व व्यवहारों को समझाना है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए नैदानिक मनोवैज्ञानिक शोध करते हैं तथा मनोविज्ञान के सिद्धान्तों एवं नियमों का उपयोग करते हैं।
- (iii) नैदानिक मनोविज्ञान मानव की योग्यताओं एवं विशेषताओं के मूल्यांकन का प्रयास करता है (Clinical Psychology attempts to assess the abilities and characteristics of individual) नैदानिक मनोविज्ञानिक आवश्यक परीक्षणों (terms) तथा प्रविधियों का उपयोग कर रोगी की योग्यताओं तथा विशेषताओं का मूल्यांकन करते हैं। इससे रोगी के रोग के लक्षणों को समझने में सहायता मिलती है। बर्नस्टीन तथा निटजेल (Bernstein and Nietzel, 1978) के अनुसार नैदानिक मनोविज्ञान की एक विशेषता यह है कि इसके अन्तर्गत व्यक्ति की व्यक्तिगत योग्यताओं तथा विशेषताओं का मूल्यांकन किया जाता है।
- (iv) नैदानिक मनोविज्ञान, मनोवैज्ञानिक कठिनाइयों से पीड़ित व्यक्तियों की सहायता का प्रयास करता है (Clinical Psychology attempts to help people suffering from psychological difficulties): नैदानिक मनोविज्ञान का ऐसे लोगों की सहायता करना है जो मनोवैज्ञानिक कठिनाइयों से पीड़ित होते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि नैदानिक मनोविज्ञान का उद्देश्य मानसिक व्यथा से पीड़ित व्यक्तियों को मनोवैज्ञानिक सहायता करना अर्थात् चिकित्सा करना है।
- (v) पैदानिक मनोविज्ञान निरूपा, पूर्वानुमान तथा उपचार से संबंधित है (Clinical Psychology is concerned with diagnosis, prognosis and treatment) नैदानिक मनोविज्ञान का संबंध मानसिक व्यवस्था से पीड़ित रोगी के लक्षणों के निरूपण (diagnosis) पूर्वानुमान (prognosis) तथा उपचार (treatment) से है।
- (vi) नैदानिक मनोविज्ञान नैदानिक मनोवृत्ति या नैदात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है (Clinical Psychology is based on clinical attitude or clinical approach): नैदानिक मनोविज्ञान नैदानिक मनोवृत्ति या नैदानिक दृष्टिकोण पर आधारित होता है। नैदानिक मनोविज्ञान में व्यक्ति विशेष की नैदानिक समस्याओं के प्रति मनोवृत्ति या दृष्टिकोण प्रधान होता है। यह व्यक्ति विशेष को हमेशा नैदानिक दृष्टिकोण से देखता है। यह नैदानिक मनोविज्ञान के अन्य शाखाओं में नहीं पायी जाती। यही विशेषता नैदानिक मनोविज्ञान को अपर्वृत्ता प्रदान करता है। बर्नस्टीन तथा निटजेल (Burnstein and Nietzel, 1978) ने भी नैदानिक मनोवृत्ति या नैदानिक दृष्टिकोण को नैदानिक मनोविज्ञान की एक विशेषता अपवर्जक (exclusive feature) माना है।
- (vii) नैदानिक मनोविज्ञान का संबंध मनोवैज्ञानिक समायोजन से है (Clinical Psychology is concerned with psychological adjustment): Rotter (1971) के अनुसार नैदानिक मनोविज्ञान का संबंध व्यक्ति के

मनोवैज्ञानिक अभियोजन के विभिन्न पक्षों का अध्ययन किया जाता है तथा व्यक्ति की अभियोजनशीलता को बढ़ाने का प्रयास किया जाता है।

संक्षिप्त में कहा जा सकता है कि नैदानिक मनोविज्ञान एक प्रयुक्त शाखा (applied branch) है जिसके अन्तर्गत सांवेगिक (emotional) एवं व्यवहारात्मक (behavioural) समस्याओं का निदान एवं उपचार किया जाता है। मानसिक रोग, मानसिक दुर्बलता, बाल-अपराध, वैवाहिक एवं पारिवारिक संघर्ष, औषध व्यसन, अपराधिक व्यवहार आदि ऐसी समस्याएँ हैं जिसके प्रति नैदानिक मनोवैज्ञानिक एक विशेष मनोवृत्ति जिसे कोरचीन (Korchin, 1986) ने नैदानिक मनोवृत्ति (Clinical attitude) कहा है। संवेगात्मक एवं व्यवहारात्मक समस्याओं की जानकारी एवं समझदारी के लिए व्यक्तित्व की गति की (personality dynamics) के अध्ययन पर बल दिया जाता है।